आत्मकथात्मक कृति 'जूठन' में दलित-व्यथा का चित्रण

-डॉ.उदय भान भगत
सहकारी अध्यापक,हिंदी विभाग,
नगाँव गर्ल्स कॉलेज,नगाँव,
असम-782002 मो.9864952272

प्रस्तावना

'दलित' शब्द का शाब्दिक अर्थ है दलन किया हुआ, कुचला हुआ, दबाया हुआ। इसके अंतर्गत वे सभी व्यक्ति आ जाते हैं जो शोषित और उत्पीड़ित हैं। इस अर्थ में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि धर्मों के दलित-वर्ग मौजूद हैं। आज मूलत: उन लोगों को दलित कहा जाता है जो अनुसूचित जाति के अंतर्गत आते हैं। भारतीय सामाज में वाल्मीकि या भंगी को सबसे नीची जाति समझा जाता रहा है और उनका पारंपरिक पेशा मानव-मल या गंदी नलियों की सफाई करना माना जाता रहा है। जे.एन.यू. के प्रो. विवेक कुमार के अनुसार दलित शब्द का जिक्र सबसे पहले सन् 1831 की मोल्सवर्थ डिक्शनरी में पाया जाता है। सन् 1972 में महाराष्ट्र में दलित पैंथर्स, मुंबई नाम का एक सामाजिक-राजनैतिक संगठन बनाया गया। उत्तर भारत में दलित शब्द को प्रचलित करने का श्रेय कांशीराम को दिया जाता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथात्मक कृति 'जूठन' दो भागों में प्रकाशित है। यह कृति हिन्दी दलित-साहित्य की एक विशिष्ट उपलब्धि के रूप में स्वीकृति प्राप्त कर चुकी है। एक दलित की आत्मकथा क्या होती है इस कृति के पाठक स्वयं समझ सकते हैं।

दलित-व्यथा का चित्रण

आत्मकथा की शुरुआत लेखक ने अपने गाँव, घर की स्थिति और ग्रामीण परिवेश से की हैं जहाँ वह पला और बढ़ा। चूहड़ों के मकान जोहड़ी के किनारे पर थे जिसके पीछे गाँव भर की औरतें दिशा-फरागत करती थी। "रात के अंधेरे में ही नहीं, दिन के उजाले में भी पर्दों में रहनेवाली त्यागी महिलाएँ घूँघटें काढ़े, दुशाले ओढ़े इस सार्वजनिक खुले शौचालय में निवृत्ति पाती थी। ... चारों तरफ गंदगी भरी होती थी। ऐसी दुर्गंध कि मिनट भर में साँस घुट जाए। तंग गलियों में घूमते सूअर, नंग-धड़ंग बच्चे, कुत्ते, रोजमर्रा के झगड़े- बस यह था। वह वातावरण जिसमें बचपन बीता।"[2] तगाओं के घर में चूहड़ों का परिवार काम करता था। साफ-सफाई, खेती-बाड़ी, मेहनत-मजदूरी सभी काम होते थे। लेखक की माँ भी दूसरे के घर काम करती थी। मेहनत के एवज में गाली और प्रताड़ना ही मिलती थी। "उम्र में बड़ा हो तो 'ओ चूहड़े' बराबर या उम्र में छोटा है तो 'अबे चूहड़े के'- यही तरीका या सम्बोधन था। ... अस्पृश्यता का ऐसा माहौल कि कुत्ते-बिल्ली, गाय-भैंसे को छूना बुरा नहीं था लेकिन यदि चूहड़े का स्पर्श हो जाए तो पाप लग जाता था। सामाजिक स्तर पर इनसानी दर्जा नहीं था। वे सिर्फ जरूरत की वस्तु थे। काम पूरा होते ही उपयोग खत्म। इस्तेमाल करो और दूर फेंको।"[3]

गाँव में जो होना था वह तो इनके साथ होता ही था। स्कूलों में भी इन दलितों की खैर नहीं था। इनके साथ जानवरों से भी बुरा बर्ताव किया जाता था। सिर्फ स्कूल के बच्चे ही नहीं मास्टर भी सारी हदें पार कर जाते थे। लेखक के पिता ने उनका दाखिला स्कूल में करा दिया था क्योंकि सरकारी स्कूलों में अछूतों को दाखिला मिलने लगा था। पर इनके लिए माहौल अनुकूल नहीं था क्योंकि इनके प्रति लोगों का रवैया और मानसिकता जैसी ही थी। स्कूल का यथार्थ बयान करते हुए लिखा है- "स्कूल में दूसरों से दूर बैठना पड़ता था, वह भी जमीन पर। अपने बैठने की जगह तक आते-आते चटाई छोटी पड़ जाती थी। कभी-कभी तो एकदम पीछे दरवाजे के पास बैठना पड़ता था। ... स्कूल में प्यास लगे तो हैंडपंप के पास खड़ा रहकर किसी के आने का इंतजार करना पड़ता था। हैंडपंप छूने पर बावेला हो जाता था। लड़के तो पीटते ही थे, मास्टर लोग भी हैंडपंप छूने पर सजा देते थे। तरह-तरह के हथकंडे अपनाये जाते थे ताकि मैं स्कूल छोड़कर भाग जाऊँ, और मैं भी उन्हीं कामों में लग जाऊँ, जिसके लिए मेरा जन्म हुआ था। उनके अनुसार स्कूल आना मेरी अनधिकार चेष्टा थी।"[4] स्कूल में मास्टर दिनभर इनसे झाड़ू लगवाते थे और पढ़ाई की बात करने पर उन्हें गाली देते हुए बुरी तरह पीटते थे। मास्टर के इस व्यवहार का पता जब बालक ओमप्रकाश के पिता को चला तो वे स्कूल में आ पहुँचे। पूछे जाने पर मास्टर उनके साथ बदतमीजी के पेश आने लगा और कहने लगा "ले जा इसे यहाँ से... चूहड़ा होके पढ़ने चला है... जा चला जा ... नहीं तो हाड़-गोड़ तुड़वा दूँगा।"[5]

अछूतों को खाने-पीने की काफी तंगी थी। तगाओं के यहाँ काम करने पर भी भरपूर मजूरी नहीं मिल पाती थी। भूख मिटाने के लिए ये गाँव में किसी के यहाँ बारात आने पर फेंकी गई जूठी पत्तलों को इकट्ठा कर लेते और पूरी के बचे-खुचे टुकड़े, एक-आध मिठाई का टुकड़ा या थोड़ी-बहुत सब्जी पत्तल पर पाकर प्रसन्न हो जाते थे। इन जूठनों को वे चटखारे लेकर खाते थे। पत्तलों को बड़े-बड़े टोकड़ों में उठाकर घर ले जाते थे और जूठन के पत्तल के पूड़ियों को अलग कर लेते थे। लेखक इस दृश्य का यथार्थ बताते हुए लिखता है "पत्तलों से जो पूरियों के टुकड़े एकत्र होते थे उन्हें धूप में सुखा लिया जाता था। चारपाई पर कोई कपड़ा डालकर उन्हें फैला दिया जाता था। ... ये सूखी पूरियाँ बरसात के कठिन दिनों में काम आती थीं। इन्हें पानी में भिंगोकर उबाल लिया जाता था। उबली हुई पूरियों पर बारीक मिर्च और नमक डालकर खाने में मजा आता था। कभी-कभी गुड़ डालकर लुगदी जैसा बना लिया जाता था, जिसे सभी चाव से खाते थे। ... दिनभर मर खप

कर भी हमारे पसीने की कीमत मात्र जूठन, फिर भी किसी को कोई शिकायत नहीं। कोई शर्मिन्दगी नहीं, पश्चाताप नहीं।"[6]

उभरती प्रतिभाएँ बाधित तो होती हैं पर दबती नहीं।अनेक बाधा निषेध के बावजूद ओमप्रकाश ने मैट्रिक पास कर लिया और दाखिला इंटर कॉलेज, बरला में हो गया। वहाँ भी उन्हें कॉलेज के लड़कों और प्राध्यापकों से तिरस्कार ही मिला। गणित के लेक्चरर नरेन्द्र कुमार त्यागी एक दिन प्यास लगने पर ओमप्रकाश से पानी लाने को कहा, पर जैसे ही इन्होंने अपनी जाति बता दी, शिक्षक 'रहने दो' कहकर खुद पानी पीने चले गये। अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लेखक ने लिखा है "मुझे लगा, गणित में मास्टर की डिग्री लेकर भी यह मास्टर कितना बौना है जिसमें इतना साहस भी नहीं कि मेरे हाथ से पानी पी सके।"[7] आप खुद इस बात का निर्णय कर सकते हैं कि एक शिक्षक जिसे समदर्शी होना चाहिए था उसका रवैया क्या उसे शिक्षक पद का अधिकारी बना सकता है?

पारिवारिक और आर्थिक अस्थिरता के वजह से आगे की पढ़ाई से ओमप्रकाश को हाथ धोना पड़ा। घर चलाने और अपने आपको पारंपरिक पेशा से अलग रखने के लिए उन्होंने एक नौकरी की तलाश शुरु की। संयोगवश ऑर्डनेंस फैक्टरी, देहरादून में अप्रेंटिस बनकर प्रवेश पा गए। एक साल प्रशिक्षण के बाद प्रतियोगितात्मक परीक्षा में चयनित होकर उच्च प्रशिक्षण हेतु ऑर्डनेंस फैक्टरी प्रशिक्षण संस्थान, खमरिया, जबलपुर, चन्द्रपुर और देहरादून जाना पड़ा। ओमप्रकाश के लिए समस्या उनका 'सरनेम' था। वे लिखते हैं, "नाम का उत्तरार्द्ध जिसे 'सरनेम' कहा जाता है, मेरे नाम के साथ जुड़कर कई प्रकार की विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न करनेवाला सिद्ध हुआ है, अपनी जाति बोधकता के कारण। जब ये स्थितियाँ अन्तर्सम्बंधों को प्रकाशित करने लगती हैं तो इस नाम से छुटकारा पाने की सोचने लगता हूँ। लेकिन जीत उपनाम की ही हुई। अभी तक तमाम हादसों के बाद भी मैं इसे

केआधार पर टी-72 और बी.एम.पी-2 टैंकों के विजन डिवाइसिस के निर्माण का कार्य एक परियोजना के तहत चलनेवाला था। ऑफिस के ज्वाइन का निर्माणी आदेश आते ही लोगों में एक अजीब तरह की सुगबुगाहट होने लगी। अपनी व्यथा को उजागर करते हुए लिखते हैं, "मुझे अहसास हुआ कि लोगों में मेरे उपनाम को लेकर एक अजीब तरह की सुगबुगाहट है, जिसे कानाफूसी कहा जाए तो गलत नहीं होगा क्योंकि मेरी जाति के किसी व्यक्ति को इस पद पर देखने के वे अभ्यस्त ही नहीं थे। ऊपर से 'वाल्मीकि' उपनाम उनके गले ही नहीं उतर रहा था। एक अजीब सी स्थिति थी। मैं एक सम्मानित पद पर इस फैक्टरी मे आया हूँ, वह भी एक विशिष्ट योग्यता द्वारा मिलनेवाली सुविधाओं के साथ जोड़कर देख रहे थे। मेरी पढ़ाई-लिखाई, प्रशिक्षण, अनुभव के बारे में वे जानने की कोशिश भी नहीं कर रहे थे।"[11] ऑर्डनेंस फैक्टरी के बड़े अफसर को कतई यह बात गले से नहीं उतर रही थी कि 'बाल्मीकि' सरनेम वाला व्यक्ति डिजाइन ऑफिस में काम कर सकता है। ऑफिस के प्रभारी ने एक दिन अपने चेम्बर में बुलाकर कहा, "मिस्टर! यहाँ डिजाइनिंग का काम है, इसमें दिमाग लगाना पड़ता है, साथ ही एशियन ड्राइंग्स है जिन्हें समझना हर किसी के बस का नहीं है।"[12] लेकिन ओमप्रकाश ने अपनी योग्यता और लगन से डिजाइन का काम लगभग एक घंटे में पूरा किया, जबकि अधिकारी ने उन्हें दो दिन का वक्त दिया था।

नवंबर 1998 में उनका तबादला तोप गाड़ी फैक्टरी (जी.सी.एफ) जबलपुर में हो गया। वहाँ भी उनके .. सरनेम को लेकर अनेक प्रश्न पूछे गये। उनके तकनीक ज्ञान को पीछे ढकेलकर एक ऐसा अनुभाग सौंपा गया जहाँ सौ से ज्यादा सफाई कर्मी थे और इतने ही श्रमिक। वहाँ भी उन्होंने कर्मियों के साथ विनम्रता का व्यवहार करके, उनके प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए उनके लिए सेफ्टी गार्ड की व्यवस्था कराई। हालाँकि यह विभाग उनको परेशान करने के लिए दिया गया था पर

दलित विमर्श

1. नागफनी-सामाजिक क्रांति का दस्तावेज-डॉ.अभय परमार 217-221
2. गूँगा नहीं था मैं (कविता संग्रह) में अभिव्यक्त दलित चेतना- डॉ.जी.वी.रत्नाकर 221-223
3. बाजारवाद के आइने में 'सुअरदान' उपन्यास का विश्लेषण-डॉ.अजय कुमार 223-224
4. दलित कविता का सौंन्दर्यबोध- डॉ.विशेष कुमार राय 225-227
5. आत्मकथात्मक कृति 'जूठन' में दलित व्यथा का चित्रण-डॉ.उदय भान भगत 228-230
6. समकालीन हिंदी काव्य में दलित समस्याओं का निरुपण-सूर्य प्रकाश 231-234
7. मानवता और परिवर्तन की सशक्त अभिव्यक्ति-'सूअरदान'-डॉ.गायत्री देवी जे.लालवानी 235-237
8. सूरजपाल चौहान की कहानियों में दलित नारी-डॉ.पारुल सिंह 237-240
9. कथ्य और शिल्प की नवीनता का उपन्यासः 'डंक'- डॉ.हेना 241-242
10. नागफनीः दलित प्रतिरोध का जीवंत दस्तावेज-जितेन्द्र विसारिया 243-247
11. वर्चस्ववादी मानसिकता और दलित साहित्य- डॉ.विलास साळुंके 248-251
12.डॉ.आंबेडकर : पुलिस, जासूस और अखबार की नजर से-डॉ.अनिरुद्ध कुमार 252-253
13. तथागत गौतम बुद्ध के वर्ण और जाति व्यवस्था पर विचार-डॉ.धर्मराज पवार/डॉ.अंबादास बाकरे 254-256
14. दलित और आदिवासी साहित्य-विमर्शः एक तुलना-डॉ.सुषमा कुमारी 257-259
15.दलित चेतना और सुशीला टाकभौरे की कविता में नारी-ऊषा यादव 259-262
16.भारत विभाजन की त्रासदी एवं दलित विमर्श -सुकांत सुमन 263-267

glish Discourse

1.An Ethnographic Introduction To The Nat : A Denotified Scheduled Castes of Chhattisgarh -Hemant Kumar 268-271
2.Complexity of Identity in August Wilson's *Radio Golf*-A.muthukumar/ Dr.v.anbarasI 272-275
3. Cultural Identity and Exploration of Multicultural-identity of Indo-Malaysians revealed in K.S.Maniam's *The Return*-A.Athiappan/ Dr.T.Gangadharan 276-279
4.Ecofeminism in India with special reference to Chipko Movement-aoyana Buragohain/Pallav Protim Mahanta 280-282
5.An Analytical Study on Autonomy Movement in Assam and Its Relevance- Golap Borah 283-286
6.Buranji Literature: A repository of history of medieval Assam-Monjit Gogoi/ Bismita Bora 287-289
7. Contributions of the Emerging Women Leadership in the Panchayati Raj Institutions(PRIs) towards Society: An Evaluative Analysis-Dr. Jayanta Baruah 290-293
8. Challenging Stereotypes:Altering the Stereotype of Dependent Woman in the Fictional works of Indian Women Novelists-Sonawane Tejal Mark 294-296
09. Locating the Supernatural in Contemporary Naga Society: A Reading of Select Short Stories of Avinuo Kire- Dr Breez Mohan Hazarika, 297-299
10. Understanding Jyotiba Phule as the Critic of Colonial Government and Indian Socio political Order-Dr. Umakanta Hazarika/ Dr. Shahiuz Zaman Ahmed 300-302
11. Education, Dalit Activism and Caste Politics in Akhila Naik's Bheda-Saraswathi G/ Dr. K. Suganthi 303-306
12. Ethnic Contestation And Conflicts In the Assam's Hill District of Dimahasao: A Case of Challenge to Peaceful Co-Existence -Dr. Lamkholal Doungel 307-311
13. A Study On Attitude Of Parents Towards Higher Education Of Girls Among Bhojpuri Community In Khowang Block, Dibrugarh District-Punam Koiri 312-322

10:39 100%

नागफनी-अंतिम-अंक-छ...

आगामी अंक के बारे में

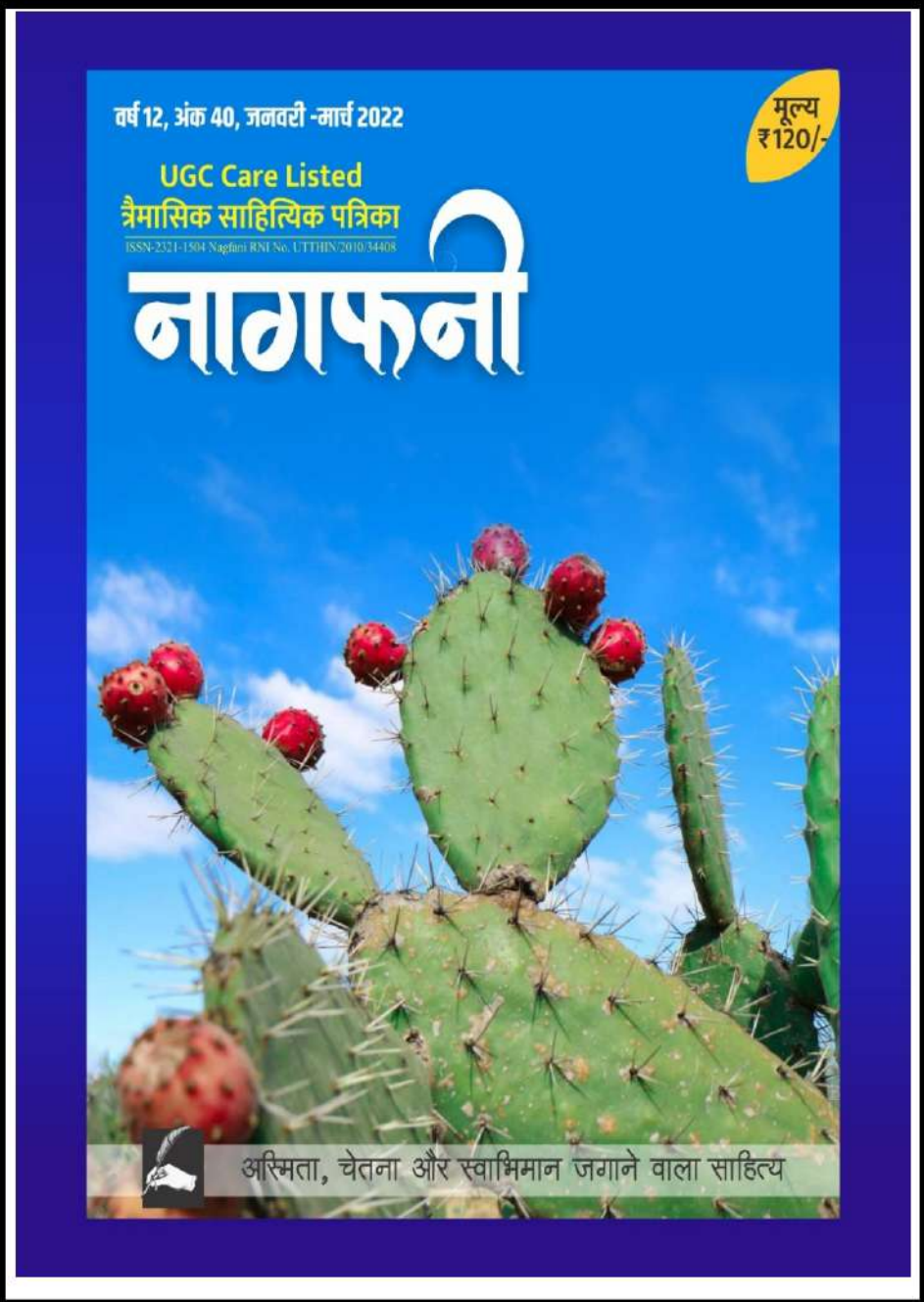

UGC CARE LISTED हिन्दी की स्तरीय पत्रिका नागफनी का अंक जून, २०२२ के अंत में प्रकाशित करने का निणन्य सम्पादक मंडल ने लिया है। अतः हिंदी लेखकों, समीक्षकों एवं शोधार्थियों से अनुरोध है कि अपनी रचनाएँ/ आलेख भेजने का कष्ट करें। आलेख और सत्यापन/सहमति पत्र **nagfani81@gmail.com** पर २५ मई, २०२२ तक भेजने का कष्ट करें। शोधालेख प्रकाशन की स्वीकृति/ अस्वीकृति का जो भी निर्णय होगा वह आपको २५ मई, २०२२ के बाद मेल से ही सूचित किया जाएगा। इसको लेकर संपर्क करने की आवश्यकता नहीं हैं। 'नागफनी' अस्मिता, चेतना, और स्वाभिमान जगाने वाली त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका है। इस पत्रिका को **ISSN-2321-1504 nagfani** और **RNI No- UTTHIN/2010/34408** नम्बर प्राप्त है। साथ ही यह **peer Reviewed Referred journal** है। किसी भी तरह की जानकारी के लिए डॉ. एन. पी. प्रजापति मो. (९७५२९९८४६७), प्रोफेसर बलिराम [illegible] (९४२०९९६१२५), प्रोफेसर संजय एल. मादार मो. (९९४५६ ६४३७९) से सम्पर्क करें। शोधालेख कृतिदेव १० फॉन्ट १[illegible] **Unicode** में टाइप करके **word** और **PDF** दोनों में भेजने का कष्ट करें। अन्य किसी टाइप फ़ॉन्ट को स्वीकृत नहीं किया ज[illegible] !!!

शोधालेख प्रकाशन के मानक

UGC CARE LISTED हिन्दी की स्तरीय पत्रिका नागफनी के जो सदस्य हैं उनका ही आलेख प्रकाशित होगा। जो भी [illegible] शोधालेख भेजना चाहते हैं उसमें निम्नोक्त बिंदु आवश्यक हैं जैसे-

१. भूमिका / प्रस्तावना
२. विषय वस्तु / बीज शब्द
३. मुख्य [illegible] उद्देश्य
४. परि[illegible] निष्कर्ष
५. सन्दर्भ